सनन्ध–मोमिन को ढूंढ़ने की

अब ढूंढ़ों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि अब मैं श्री राजजी महाराज की आज्ञा से मूल निसबती (सम्बन्धी) अपने परमधाम की रूहों को ढूंढूंगी। वह मोमिन मेरे घर के साथी हैं तथा मेरे प्रीतम की अंगना हैं।

नूर पार पिउ एक खुद हैं, और न दूजा कोए।
और नार सब माया, यामें भी रूह दोए।। २ ।।

अक्षर के पार मेरे प्रीतम हैं। वहां दूसरा कोई नहीं हैं। यहां सब जगह माया ही माया है। इसमें दो तरह के जीव हैं।

इत असलू रूह विष्णु की, दूजी रूह कुफरान।
इन दोऊ से न्यारे मोमिन, सो आगे कहूंगी पेहेचान।। ३ ।।

यहां पर एक तो भगवान विष्णु का असल जीव है। दूसरे काफिर (नास्तिक) हैं, मोमिन इन दोनों से न्यारे हैं, जिनकी पहचान आगे बताऊंगी।

मोमिन सुख असल वतनी, विष्णु का सुख और।
दुनी विष्णु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर।। ४ ।।

मोमिन का सुख असल का है और अखण्ड परमधाम का है। भगवान विष्णु का सुख अलग तरीके का है। दुनियां और भगवान विष्णु न्याय के दिन अखण्ड हो जाएंगे।

अब लछन देखो मोमिन के, जो अरवाहें अर्स घर।
ए वतनी वचन सुन के, आवत हैं तत्पर।। ५ ।।

अब मोमिनों के लक्षण देखो जो हमारे घर परमधाम के हैं। यह हमारे घर के साथी वाणी को सुनकर तुरन्त ही आ जाते हैं।

अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।। ६ ।।

छः हजार जो तामसी सखियां हैं, उनकी खेल देखने की इच्छा बाकी थी। उनके वास्ते ही यह ब्रह्माण्ड बनाया है।

भूल गइयां खेल में, जो मोमिन हैं समरथ।
नूर इमाम को मुझ पे, केहे समझाऊं अर्थ।। ७ ।।

ऐसे समर्थ मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं। इमाम मेंहदी का ज्ञान मेरे पास है। इसे समझाकर कहूंगी।

सबों को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन।
खेल देखाऊं खोल के, जिन बिध ए उतपन।। ८ ।।

मैं सबको इकट्ठा करूंगी और सब संशय मिटाकर उनके हृदय में दृढ़ता लाऊंगी। सारे रहस्य, जिनसे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है, खोलकर खेल दिखाऊंगी।

Nijanand App

ए खेल है जोरावर, बड़ो ते रचियो छल।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल।। ९ ।।

यह खेल बड़ा शक्तिशाली है। इस माया ने ऐसा छल रच रखा है। जब इसके बल को नष्ट कर दूंगी तो दुनियां को पता चलेगा कि यह माया तो कुछ भी नहीं थी।

तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल।
सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल।। १० ।।

हे मोमिनो! तुम माया के नहीं हो। माया के नशे का यहां बड़ा जोर है। सच्ची ब्रह्मसृष्टि झूठी माया पकड़कर बैठी है। छल ऐसा बल वाला है।

तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल।
छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल।। ११ ।।

हे मोमिनो! तुम खेल देखने के लिए आए हो और खेल में मिल गए हो (खेल बन गए हो)। माया के जीवों को इसका असर नहीं होता, क्योंकि वह इसी जल की लहरें हैं।

ए झूठी तुम को लग रही, तुम रहे झूठी लाग।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग।। १२ ।।

इस झूठी माया ने तुम्हें पकड़ रखा है और माया को तुमने पकड़ रखा है। यह झूठी माया तो खत्म हो जाएगी, परन्तु तुम्हें दाग लग जाएगा।

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस।
कमी कहे मैं न करूं, पर तुम छल हुआ सिरपोस।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि उस समय (परमधाम में) तुम्हारी बड़ी हांसी होगी, इसलिए मुझे दोष मत देना। मैं तो किसी तरह की कमी कहने में नहीं कर रही हूं, पर तुमने ही माया से सिर ढांप लिया है।

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन।
जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन।। १४ ।।

तुमने खेल देखने की मांग धनी से की थी। अब यदि खेल में भूल गईं तो फिर से ऐसा दिन हाथ नहीं आएगा।

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सब मोमिन।
ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन कराओ जिन।। १५ ।।

सब मोमिनों के सामने तुम्हारा मुख नीचा होगा। इसलिए, हे मोमिनो! अपने अखण्ड घर परमधाम में ऐसी हांसी कोई मत कराना।

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दुजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसम सों बैठी मुख फेर।। १६ ।।

अपने धनी से मुख फेरकर मत बैठो। नहीं तो परमधाम में तुम्हारा मुंह कैसे ऊंचा होगा? यहां दूसरी बार तो आना नहीं है, इसलिए धनी से मुख फेरकर मत बैठो। क्या चलते समय दुःख साथ ले चलोगे?

तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन।
बताए देऊं या बिध, ज्यों दृढ़ होवे आप मन।। १७ ।।

तुम्हें न अपनी खबर है, न माया की, न अपने घर की और न धाम धनी की, इसलिए मैं तुम्हें हर तरह से बता रही हूं, जिससे तुम्हारे मन में दृढ़ता आ जाए।

Nijanand App

ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल।। १८ ।।

जब तक इस माया के ब्रह्माण्ड की असल हदीकत नहीं बता देती, तब तक इसकी ताकत का ज्ञान (पता) नहीं मिलेगा (चलेगा), इसलिए इस ब्रह्माण्ड का ही प्रलय कर देती हूं, जिससे माया का सारा नशा ही उतर जाए।

अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम।
नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमिन मुस्लिम।। १९ ।।

हे मेरे सच्चे मोमिनो! अब तुम जिस खेल को देखने आए हो उस छल के खेल को देखो। मैं तुम्हारे अंग में जागृत बुद्धि और आवेश देती हूं।

मोमिन मांग्या मोले पें, सो भूल गैयां बातें मूल।
सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल।। २० ।।

हे मोमिनो! तुमने इसे धनी से मांगा था। उस मूल घर की बातें यहां आकर भूल गए हो। अब खेल दिखाकर रसूल के फरमान से तुम्हें याद दिलाऊंगी।

या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर।
खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर मांहें बाहेर।। २१ ।।

इस माया के ब्रह्माण्ड में अनेक प्रकार के छल हैं। उन्हें अब मैं जाहिर कर देती हूं। अन्दर और बाहर के दरवाजे, ताले और इसे खोलने की युक्ति बता देती हूं (खोल देती हूं)।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ २६८ ॥

सनन्ध–खेल के मोहोरों की

अब निरखो नीके कर, जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखावें खसम।। १ ।।

हे मोमिनो! जिस खेल को तुम देखने के लिए आए हो, उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरथ खंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है, जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा हुआ है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

भरतखण्ड की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन।। ४ ।।

इस सारे भरतखण्ड में जो अच्छी धरती है उसे नौतनपुरी कहते हैं। यहां पर अखण्ड मूल परमधाम की बात जाहिर हुई।

Nijanand App